17–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

प्रदर्शनियों की आजकल धाम–धूम लगी हुई है। इस विराट स्वरूप के चित्र पर भी अच्छा समझाया जा सकता है। सभी शूद्र तो हैं इस समय। फिर शूद्रों के बाद आवेंगे ब्राह्मण। ब्राह्मण बने बिना देवता बन नहीं सकते हैं। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण चाहिए। तुम बच्चों को सहज समझ में आता है। मनुष्यों की बुद्धि में बैठता नहीं हैं। कलियुग के बाद जरूर नई दुनियां चाहिए। तुम बच्चों की बुद्धि में सारे वर्ण हैं। ब्राह्मण सो देवता। 84जन्म भी तुम इसी में दिखात हो। बाकी तो अनेक मनुष्य और अनेक उनके प्रश्न होंगे ;क्योंकि अनेक मत वाले हैं। उनको फिर एक श्रीमत पर लाने में मेहनत लगती है। ड्रामा की ढाल पर भी रहना होता है। जो पास्ट हुआ सो फिर उसका चिंतन नहीं चले। यह प्वाइंट्स समझानी थी। अच्छा, आगे चलकर फिर समझावेंगे। बातें पूरी हुईं तो स्टाप कर देना चाहिए। प्वाइंट्स का ही चिंतन नहीं चलता रहना चाहिए। पुरुषार्थ करते कराते रहते हैं। ड्रामा पर खड़े रहना है। भक्तिमार्ग में तो बहुत दर–बदर होते हैं। यज्ञ–तप ,दान–पुण्य। हर एक जन्म में गुरू करना होता है। फिर इस समय गुरू एक ही मिलता है। सर्व की गति सदगति करने वाला है एक। गुरू किया जाता है गति सदगति के लिए। तो तुम्हारा अब भटकना (बंद) हो गया है। वहां तो भिन्न2 प्रकार के साधु–संत होते हैं तो उनके पास जाते हैं। तुम बच्चों को भी जाने की दरकार नहीं है। तुमका तो एक से ही गुण सीखना है। तुम सिर्फ जाते हो तो रेख–देख (करने)। तुमको तो निश्चय रहता है। वो नहीं समझते हैं कि कल्प पहले भी हमने यही गुरू किया था। तुम निश्चय करते हो सदगति दाता गुरू एक ही है। जो बाप तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न बना देते हैं। यह तो तुम बच्चों को मालूम है कि सर्वगुण सम्पन्न एक से ही बनना है। कल्प पहले भी बने थे। तुम सभी ही सर्वगुण सम्पन्न.....बन रहे हो। सबका पुरुषार्थ अच्छी रीति चलता है। प्रदर्शनी में बहुत नहीं समझाया जाता है। जब ऐसे समझाने से बैठते हैं तो.....लग जाता है। (अच्छा ,ऐसे ही) समझावें तो टाइम ही चला जावे। कायदा है कि एक–एक को अलग समझाना। झुण्ड में भिन्न2 विचार होते हैं। अकेले को तो अच्छी रीति पकड़ लेते हो। जैसे कि शुरू में एक2 को समझाया जाता था। तो भी .....बदनाम होता था कि आंखों में आंखें लड़ाते हैं। एक/दो के सामने बैठते हैं। हम आत्माएं तो भाई2 ठहरे ना। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे और तुम सतोप्रधान नई दुनियां के मालिक बन जावेंगे। जब विनाश सामने आवेगा तब फिर समझेंगे कि कुछ है। बहुत वृद्धि को भी पावेंगे। (समझेंगे) यह तो भगवान राजयोग सिखा रहे हैं। बच्चे जानते हैं सृष्टि बदलने वाली है। उपद्रव दिन–प्रतिदिन बहुत होते रहते हैं। पैसों के लिए पिकेटिंग भूख हड़ताल क्या2 करते रहते हैं। विघ्नों का कोई पारावार नहीं है। फिर बाद में निर्विघ्न दुनियां बन जावेगी। बाप के स्थापन किये हुए राज्य में कोई विघ्न पड़ नहीं सकता है। विघ्न पड़ते ही हैं रावण के पुराने राज्य में। बच्चे भी समझ गये हैं रावण ही बड़ा दुश्मन है। मनुष्य रावण जलाते हैं ;परंतु समझते नहीं कि वो हमारा दुश्मन है। दुश्मन समझकर भी जलाय नहीं जाता। भभके से जैसे कि खेल करते हैं। बच्चे समझ गये हैं कि हमारा पुराने ते पुराना दुश्मन यही है जिससे कि हम हारते हैं। अब जीत पहन रहे हैं श्रीमत से। बच्चों को समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। कोई अच्छा समझते हैं ब्र.कु.कु. अच्छा काम करती हैं। नया धर्म कोई स्थापन नहीं होता। जो धर्म प्रायःलोप हो गया है वो ही फिर से स्थापन करते हैं। तुम जानते हो यह आर्यसमाजी आदि फिर से अपने मठपंथ स्थापन कर रहे हैं। उनको ड्रामा का पता नहीं है। तुम बच्चों को तो सारी दुनियां की आदि,मध्य,अंत की नालेज है। कोई एक भी मनुष्य नहीं जिसकी बुद्धि में यह .....हो। तुमको सारा झाड़ बुद्धि में है। तुम्हारे में भी थोड़े2 हैं जिनकी बुद्धि में अच्छी2 प्वाइंट्स हैं। प्वाइंट्स तो बहुत2 हैं। सात रोज जरूर आना पड़े। फिर भी कहा जाता है जो भी हम सर्विस करते हैं वह ड्रामाप्लान अनुसार। प्वाइंट्स का कोई चिंतन नहीं चले।.....अच्छा, गुडनाइट।